दिनांक 03-08-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

शिव-शक्ति व पाण्डव सेना को तैयार होने के लिये सावधानी

संकल्प वाणी और कर्म तीनों युक्तियुक्त बनाओ
योग-युक्त युक्तियुक्त स्थिति में कर्म करते जाओ

हर पल अपना अटेंशन सर्व शक्तियों पर रखना
टेंशन के वातावरण का प्रभाव ठीक से परखना

टेंशनमुक्ति हेतु याद की यात्रा का प्रोग्राम बनाना
समय समय पर आत्माओं को प्रोग्राम में बुलाना

याद की यात्रा से अपना किला मजबूत बनाना
इसी युक्ति पर चलकर सेवाओं को आगे बढ़ाना

मेहनत कर खुद को बाप समान मास्टर बनाना
इसी विशेषता से फर्स्ट क्वालिटी वाले कहलाना

बाप की हर बात पर खुद में पूरा निश्चय जमाना
कमजोर आत्माओं को भी निश्चय बुद्धि बनाना

समय प्रमाण जीवन में चाहे कोई मुश्किल आए
लेकिन पाण्डव सेना को प्रभावित ना कर पाए

याद की यात्रा से वातावरण पावरफुल बनाओ
पुरानी दुनिया के वातावरण से खुद को बचाओ

कर्मभोग और कर्मेन्द्रियों की अधीनता मिटाओ
योग के सिंघासन पर निरन्तर खुद को बिठाओ

अंत समय तक पुरुषार्थ के पथ पर पेपर आएंगे
पास करोगे इनको तो मार्क्स जमा होते जाएंगे